

SHARABI MUAZZIN KAISE BANA ? (HINDI)



(हिस्सा १)

म-दनी काफ़िलों की बहारेँ

शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ?

मअ

म-दनी काफ़िला जद्वल

- ❁ रोज़गार मिल गया 08
- ❁ शराब का आदी कैसे ताइब हुआ ? 11
- ❁ वालिद साहिब सिहहत याब हो गए 13
- ❁ औलाद की ने'मत मिल गई 15

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे त्रीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरि र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़
लीजिये اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ यह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ **اللَّهُمَّ** ! عَزَّوَجَلَّ हम पर इल्म व हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत
नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले । (المستطرف ج ١ ص ٤٠٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना
व बकीअ
व मग़िफ़रत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ?

येह रिसाला (शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ?)

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में पेश किया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब
दे कर पेश किया है, इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए
मक्तूब, ई-मेइल) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद, गुजरात ।

MO. 09374031409 E-mail : maktabahind@gmail.com

www.dawateislami.net

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

पहले इसे पढ़ लीजिये

التَّحْمُدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी सारी दुन्या में नेकी की दा'वत आम करने का अज्मे मुसम्मम रखती है। इस सिल्लिसले में दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के बे शुमार म-दनी क़ाफ़िले 3 दिन, 12 दिन, 30 दिन और 12 माह के लिये मुल्क ब मुल्क, शहर ब शहर और क़रिया ब क़रिया सफ़र कर के इल्मे दीन और सुन्नतों की बहारें लुटा रहे हैं और नेकी की दा'वत की धूमें मचा रहे हैं।

यक़ीनन राहे खुदा में सफ़र करने वाले आशिक़ाने रसूल के हमराह दा'वते इस्लामी के इन म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना बहुत बड़ी सआदत है। इन म-दनी क़ाफ़िलों की ब-र-कत से पंज वक्ता नमाज़ व नवाफ़िल की पाबन्दी के साथ साथ प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नतें भी सीखने को मिलती हैं और यूँ इल्मे दीन हासिल करने का मौक़अ मुयस्सर आता है। इल्मे दीन के लिये सफ़र के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं चुनान्चे हज़रते अबू दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को फ़रमाते हुए सुना कि “जो इल्म की तलाश में किसी रास्ते पर चलता है तो अल्लाह तआला उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है और बेशक फ़िरिश्ते तालिबुल इल्म के अमल से खुश हो कर उस के लिये अपने पर

बिछा देते हैं और बेशक ज़मीन व आस्मान में रहने वाले यहां तक कि पानी में मछलियां अलिमे दीन के लिये इस्तिग़फ़ार करती हैं और अलिम की अ़बिद पर फ़ज़ीलत ऐसी है जैसी चौदहवीं रात के चांद की दीगर सितारों पर और बेशक उ-लमा वारिसे अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام हैं बेशक अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام दिरहमो दीनार का वारिस नहीं बनाते बल्कि येह नुफूसे कुदसिय्या عَلَيْهِمُ السَّلَام तो सिर्फ़ इल्म का वारिस बनाते हैं तो जिस ने इसे हासिल कर लिया उस ने बड़ा हिस्सा पा लिया ।”

(सनن ابن ماجه، الحديث २२३، ج १، ص १६५)

म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** अपने साबिका तर्जे जिन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ मिलेगा और दिल हुस्ने अ़कि़बत के लिये बेचैन हो जाएगा जिस के नतीजे में इरतिकाबे गुनाह की कसरत पर नदामत महसूस होगी और तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी और **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** अ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में मुसल्लसल सफ़र करने के नतीजे में ज़बान पर फ़ोहूश कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह दुरूदे पाक जारी हो जाएगा, येह तिलावते कुरआन, हम्दे इलाही और ना'ते रसूल की अ़दी बन जाएगी, गुस्से की अ़दत रुख़्सत हो जाएगी और इस की जगह नरमी ले लेगी, बे सब्री की अ़दत तर्क कर के साबिरो शाकिर रहना नसीब होगा, तकब्बुर जैसी बीमारी से जान छूट जाएगी और एहतिरामे मुस्लिम का ज़ब्बा मिलेगा, दुन्यावी मालो दौलत की लालच से

पीछा छूटेगा और नेकियों की हिर्स मिलेगी और यूं राहे खुदा में मुसल्लसल सफ़र करने से जिन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आशिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र से जहां हमें उख़वी फ़वाइद हासिल होंगे वहीं दुन्यवी ब-रकात भी समेटने को मिलेंगी । **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** म-दनी क़ाफ़िलों की मु-तअद्द बहारे हैं, येह रिसाला “म-दनी क़ाफ़िले की म-दनी बहारे” हिस्सए अब्वल “शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ?” के नाम से पेश किया जा रहा है जब कि सेंकड़ों बहारे तरतीब के मरहले में हैं ।

अल्लाह तआला हमें “अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश” करने के लिये म-दनी इन्आमात पर अमल और म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक्की अता फ़रमाए । **أُمِّيْنُ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيْنِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ।

शो 'बए अमीरे अहले सुन्नत

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

10 जुमादल उला सि. 1431 हि. 25 एप्रिल सि. 2010 ई.

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 آمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि र-ज्वी ज़ियाई الْعَالِيَهُ دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ अपने रिसाले "बरेली से मदीना" में नक्ल फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीनाए मुनव्वरह, सरदारे मक्काए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने दिल नशीन है : "फ़र्ज हज़ करो बेशक इस का अज़्र बीस ग़ज़वात में शिर्कत करने से ज़ियादा है और मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ना इस के बराबर है।"

(فردوس الاخبار ج ٢ ص ٢٠٧ حديث ٢٤٨٤ دارالكتاب العربي بيروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿1﴾ शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ?

महाराष्ट्र (हिन्द) के इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं म-रजे इस्यां में इन्तिहा द-रजे तक मुब्तला हो चुका था। दिन भर मजदूरी करने के बा'द जो रक़म हासिल होती रात को उसी

से **مَعَاذَ اللَّهِ** शराब ख़रीद कर ख़ूब अय्याशी करता, शोर शराबा करता, गालियां तक बकता और वालिदैन व अहले महल्ला को ख़ूब तंग करता इस के इलावा मैं परले द-रजे का जूआरी व बे नमाज़ी भी था। इसी ग़फ़लत में मेरी जिन्दगी के कीमती अय्याम जाएअ होते रहे आख़िर कार मेरी किस्मत का सितारा चमका। हुवा यूं कि खुश किस्मती से मेरी मुलाक़ात दा'वते इस्लामी के एक जिम्मादार इस्लामी भाई से हुई। उन्होंने ने इन्फ़रादी कोशिश करते हुए मुझे म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की तरगीब दिलाई। मुझ से इन्कार न हो सका और मैं हाथों हाथ तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। म-दनी क़ाफ़िले में अशिक़ाने रसूल की सोहबत मिली और शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ब-र-कत हासिल हुई कि मुझ जैसा पक्का बे नमाज़ी, शराबी व जूआरी ताइब हो कर न सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने वाला बन गया बल्कि सदाए मदीना लगाने और दूसरों को म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनाने वाला बन गया। **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** मेरी इन्फ़रादी कोशिश से अब तक 30 इस्लामी भाई म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बन चुके हैं और इस वक़्त मैं एक मस्जिद में मुअज़्ज़िन हूं और ख़ूब म-दनी कामों की धूमें मचा रहा हूं।

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

《2》 मैं क्रिकेट खेला करता था

हिन्द के मुक़ीम इस्लामी भाई ने म-दनी क़ाफ़िले से हासिल होने वाली ब-रकात तहरीर फ़रमाई जिन का लुब्बे लुबाब पेश किया जाता है : दा'वते इस्लामी के म-दनी माहौल के साथ वाबस्तगी से क़ब्ल मेरी ज़िन्दगी के शबो रोज़ यूं गुज़रते कि सारी सारी रात घर से गाइब रहता । क्रिकेट खेलने और दोस्तों की फुज़ूल महफ़िलों में अपनी ज़िन्दगी के अनमोल हीरे जाएअ करने का एहसास तक न होता । घर वालों को बिला वजह सताता, बेहूदा काम और दीगर मआसी में मुब्तला रहना मेरा ओढ़ना बिछोना बन चुका था । एक दिन मैं ने अपने शहर में सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजाए सफ़ेद लिबास में मल्बूस कुछ इस्लामी भाइयों को देखा, चूँकि मैं दा'वते इस्लामी से वाक़िफ़ न था इस लिये मैं ने एक शख़्स से पूछा येह कौन हैं ? उस ने जवाबन कहा येह तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा 'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन हैं, मैं उस के जवाब से मुत्मइन न हुवा और मेरे दिल में तरह तरह के वस्वसे आने लगे मैं ने पक्का इरादा कर लिया कि इन से बिल्कुल नहीं मिलूंगा । कुछ दिन बा'द उन्ही इस्लामी भाइयों का म-दनी क़ाफ़िला हमारे महल्ले में तशरीफ़ ले आया मगर मैं उन से न मिला और सीधा घर चला आया । घर पहुंचने पर घर वालों ने बताया कि कुछ इस्लामी भाई सुन्नतों भरा बयान सुनने

की दा'वत दे कर गए हैं, लेकिन मैं फिर भी इस्लामी भाइयों से न मिला। मैं तो म-दनी काफ़िले के शु-रका इस्लामी भाइयों से मिलने से भी भागता था लेकिन खुदा عَزَّ وَجَلَّ का करना ऐसा हुआ कि घर वालों ने ब इस्सारे मुझे म-दनी काफ़िले के साथ रवाना कर दिया, मैं म-दनी काफ़िले में शरीक तो हो गया लेकिन वसाविस ने मेरी जान न छोड़ी। मैं ने सोचा कि रास्ते ही से कहीं इधर उधर गाइब हो जाऊंगा लेकिन शु-रकाए काफ़िला के मा'मूलात और उन के तौर तरीकों को देख कर मुझे इस बात का यक़ीन हो गया कि यह तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और आप के सहाबा رَضَوْنَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ के नक़्शे क़दम पर चलने वाले लोग हैं। मैं ने सोचा जब मुरीदों का (सुन्नतों पर अमल करने का) यह आलम है तो इन के पीरो मुर्शिद की क्या शान होगी लिहाज़ा मैं ने यह अहद कर लिया कि मैं भी उसी वलिये कामिल का मुरीद बनूंगा। م-दनी काफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से मैं दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गया। गुनाहों से तौबा की और नमाज़, रोज़ा और दीगर फ़राइज़ व सुन्नत का पाबन्द बन गया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿3﴾ रोज़गार मिल गया

बाबुल मदीना (कराची) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : छ माह से मैं बे रोज़गार था। रोज़गार की कोई सबील न बन पा रही थी। बे रोज़गारी और बढ़ती महंगाई ने परेशान कर दिया था इसी अ़ालम में मेरे शबो रोज़ कट रहे थे मैं ने सुन रखा था कि म-दनी क़ाफ़िले में दुआएं क़बूल होती हैं चुनान्वे मैं ने म-दनी क़ाफ़िले में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से न सिर्फ़ इल्मे दीन सीखने का जज़्बा मिला बल्कि मुझे जल्द ही रोज़गार मिल गया। मज़ीद बर आं यह कि मैं ने अपने वालिद साहिब के हमराह र-मज़ानुल मुबारक में उम्रह करने की भी सआदत हासिल की और यह बयान देते वक़्त मैं हल्का मुशा-वरत के ख़ादिम की हैसियत से म-दनी कामों की धूमें मचाने में मसरूफ़ हूं।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

﴿4﴾ नमाज़ और वुजू का तरीक़ा कैसे सीखा ?

डेरा इस्माईल ख़ान (खैबर पख़्तून ख़्वाह) में मुक़ीम इस्लामी भाई ने म-दनी क़ाफ़िले से हासिल होने वाली ब-रकात

तहरीर फ़रमाई जिस का खुलासा येह है : मैं ने अपनी ज़िन्दगी का एक बहुत बड़ा हिस्सा इल्मे दीन से दूरी की वजह से गुनाहों में गुज़ार दिया। एक दिन हमारे करीबी गाउं के रिहाइशी एक मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी हमारे गाउं में तशरीफ़ लाए उन्होंने ने बा'दे अस् अलाकाई दौरा बराए नेकी की दा'वत की तरकीब बनाई, नमाज़े मग़रिब के बा'द सुन्नतों भरा बयान किया और बयान के आख़िर में उन्होंने ने हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की तरगीब भी दिलाई। मैं ने इज्तिमाअ में शिर्कत की निय्यत तो कर ली लेकिन दा'वते इस्लामी का म-दनी मर्कज़ हमारे गाउं से काफ़ी दूर था इस लिये मैं इज्तिमाअ में शरीक न हो सका। अगले हफ़ते वोही इस्लामी भाई फिर तशरीफ़ लाए, अलाकाई दौरा बराए नेकी की दा'वत की तरकीब बनाई और बा'दे मग़रिब सुन्नतों भरा बयान किया इसी तरह एक माह गुज़र गया लेकिन मैं इज्तिमाअ में शिर्कत न कर सका। अब की बार वोही इस्लामी भाई म-दनी काफ़िले के हमराह हमारे गाउं में तशरीफ़ लाए और इन्फ़रादी कोशिश के ज़रीए मुझ समेत तीन चार इस्लामी भाइयों को इज्तिमाअ के लिये तय्यार कर लिया। इस मरतबा मैं अपनी निय्यत को अ-मली जामा पहनाते हुए हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में जा पहुंचा। सुन्नतों भरे बयान के बा'द ज़िक्र व दुआ हुई, दौराने दुआ गिर्या व ज़ारी के रिक्कत अंगेज़ मनाज़िर देख कर मुझ गुनाहगार को भी रोना आ

गया। इज्तिमाअ की ब-रकात हाथों हाथ जाहिर हुई और मैं ने येह अज्मे मुसम्मम कर लिया कि **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मैं म-दनी काफ़िले में ज़रूर सफ़र करूंगा। अगले हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में अकेला ही पहुंच गया और इज्तिमाअ के अगले ही रोज़ म-दनी काफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** म-दनी काफ़िले में सफ़र करने की ब-र-कत से मेरी नमाज़, वुजू, गुस्ल में पाई जाने वाली ग़-लतियां दूर हुई और मैं ने कई दुआएं भी सीख लीं। मैं ने गुनाहों से तौबा कर के अपने आप को म-दनी रंग में रंग लिया। जब मैं म-दनी काफ़िले से घर पलटा तो मेरे सर पर सब्ज सब्ज इमामे का ताज जगमगा रहा था येह सब देख कर लोग हैरान थे कि इस के अन्दर येह तब्दीली कैसे आ गई ? कुछ दिनों के बा'द मैं ने हिम्मत कर के मस्जिद में फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स भी शुरूअ कर दिया, दर्सें फ़ैज़ाने सुन्नत की ब-र-कत से मज़ीद तीन इस्लामी भाइयों ने सब्ज सब्ज इमामे का ताज सजा लिया, इस के बा'द हम बा काइ-दगी से हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत करने लगे और इस तरह हमारे गाउं में भी म-दनी कामों की बहार आ गई।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

﴿5﴾ शराब का आदी कैसे ताइब हुवा ?

बाबुल मदीना (कराची) में मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है : सि. 1425 हि. ब मुताबिक़ सि. 2005 ई. की बात है कि दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने से क़ब्ल बुरी सोहबत की नुहूसत से मैं ने शराब पीना शुरू कर दी । चूँकि मेरे वालिद साहिब इन्तिक़ाल फ़रमा चुके थे और घर में सब से बड़ा मैं ही था इस लिये घर की तमाम जिम्मादारी मेरे कन्धों पर थी, दिली तौर पर शराब को बुरा जानने के बा वुजूद मैं आदत के हाथों मजबूर हो चुका था, हजारहा कोशिशों के बा वुजूद मैं इस से जान न छुड़ा सका । चुनान्चे इस निय्यत से कि राहे खुदा में सफ़र कर के दुआ करूं तो शायद इस आदते बद से नजात मिल जाए मैं ने आशिक़ाने रसूल के हमराह तीन दिन के म-दनी काफ़िले में सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार किया और दौराने म-दनी काफ़िला ख़ूब दुआएं कीं, म-दनी काफ़िले के दौरान मुझे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की जो रहमतें मिलीं वोह बयान से बाहर हैं । **م-दनी** **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** काफ़िले की ब-र-कत से शराब नोशी की बुरी आदत से मेरी जान छूट गई, वोह दिन और आज का दिन तीन साल का अर्सा गुज़र गया है **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** शराब पीना तो दूर की बात मैं ने येह

मन्हूस काम करने के बारे में कभी सोचा तक नहीं। येह बयान देते वक्त मैं अलमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना कराची) में दस रोज़ा इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की ब-र-कतें लूटने में मसरूफ़ हूँ और इमामा शरीफ़ का ताज भी मेरे सर पर जगमगा रहा है।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

﴿6﴾ रोज़गार का मस्अला हल हो गया

बाबुल मदीना (कराची) के मुक़ीम इस्लामी भाई म-दनी काफ़िले से हासिल होने वाली ब-रकात कुछ यूँ बयान करते हैं : मैं कुछ अर्से से बे रोज़गारी की वजह से काफ़ी परेशान था। एक रोज़ मैं ने अपने एक दोस्त से इस परेशानी का इज़हार किया तो उन्होंने ने इन्फ़रादी कोशिश करते हुए मुझे दा'वते इस्लामी के तहत सुन्नतों की तरबियत के लिये राहे खुदा में सफ़र करने वाले म-दनी काफ़िलों की तरगीब दिलाई और कहा कि आप म-दनी काफ़िले के मुसाफ़िर बन जाएं إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ आप का येह मस्अला हल हो जाएगा। उन की इन्फ़रादी कोशिश रंग लाई और मैं हाथों हाथ तीन दिन के म-दनी काफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। काफ़िले से वापसी को अभी चन्द ही दिन गुज़रे थे कि म-दनी काफ़िले की ब-र-कत जाहिर हुई और

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मुझे रोज़गार मिल गया ।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ देखा आप

ने कि म-दनी काफ़िले में सफ़र करने की ब-र-कत से काफ़ी अर्से से बे रोज़गार इस्लामी भाई को रोज़गार मिल गया । अगर हम ग़ौर करें तो आज हमारे मुआ-शरे के बे शुमार मसाइल में से एक अज़ीम मस्अला बे रोज़गारी का भी है अगर हम शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ की तरफ़ से अता कर्दा म-दनी जद्वल (टाइम टेबल) के मुताबिक़ हर माह तीन दिन के म-दनी काफ़िले में सफ़र को अपना मा'मूल बना लें तो न सिर्फ़ हमें कसीर सुन्नतें और इल्मे दीन सीखने का मौक़अ मिलेगा बल्कि कुछ बईद नहीं कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की रहमत से बे रोज़गारी व दीगर मसाइल भी हल हो जाएं ।

नोकरी चाहिये आइये आइये काफ़िले में चलें, काफ़िले में चलो
तंगदस्ती मिटे, दूर आफ़त हटे लेने को ब-र-कतें, काफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

﴿7﴾ वालिद साहिब सिद्दहत याब हो गए

एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है : मेरे वालिद

साहिब कुछ अर्से से पथरी के मरज में मुब्तला थे इलावा अर्जीं उन के पाउं इस क़दर दर्द करते थे कि पाउं उठाना दुश्वार हो जाता था । काफ़ी इलाज करवाने के बा वुजूद इन अमराज से इफ़ाका न हुवा । हम अपने वालिद साहिब की येह हालत देख कर ख़ून के आंसू रोते थे । दिन यूंही गुज़रते रहे मुहर्मुल हराम शरीफ़ का महीना तशरीफ़ लाया तो मैं इस निय्यत से तीन दिन के म-दनी काफ़िले का मुसाफ़िर बन गया कि काफ़िले की ब-र-कत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे वालिद साहिब को शिफ़ा अता फ़रमा दे । काफ़िले के शु-रका इस्लामी भाइयों के सामने भी मैं ने अपने वालिद साहिब के मरज का ज़िक्र किया । म-दनी काफ़िले में शरीक आशिक़ाने रसूल ने मेरे वालिद साहिब के लिये ख़ूब दुआएं कीं । जब मैं घर पलटा तो الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी काफ़िले में आशिक़ाने रसूल की सोहबत में रह कर मांगी जाने वाली दुआओं की ब-र-कत से मेरे वालिद साहिब सिद्दहत याब हो चुके थे । इस के साथ साथ म-दनी काफ़िले की ब-र-कत से वुजू व गुस्ल के फ़राइज़, इन का तरीक़ा और मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मीठी मीठी सुन्नतें सीखने का भी मौक़अ़ मिला ।

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

﴿8﴾ औलाद की ने'मत मिल गई

राजस्थान (हिन्द) के मुक़ीम इस्लामी भाई की तहरीर का खुलासा है : मेरी शादी को 13 बरस बीत चुके थे लेकिन आह ! मैं अभी तक औलाद की ने'मत से महरूम था । एक दिन तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्होंने ने मुझे म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की ब-रकात सुनाई और इन्फ़रादी कोशिश करते हुए मुझे म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की तरगीब दिलाई । उन की इन्फ़रादी कोशिश के नतीजे में मैं तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया । म-दनी क़ाफ़िले में अ़शिक़ाने रसूल की सोहबत में रह कर मैं ने ख़ूब दुआएं कीं । म-दनी क़ाफ़िले से वापसी को अभी चन्द ही दिन गुज़रे थे कि الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले में अ़शिक़ाने रसूल की सोहबत में रह कर मांगी जाने वाली दुआओं की क़बूलिय्यत इस तरह ज़ाहिर हुई कि चेकअप करवाने पर मा'लूम हुवा कि मेरी अहलिया उम्मीद से हैं और कुछ ही अर्से के बा'द अल्लाह तअ़ाला ने मेरे आंगन को चांद से म-दनी मुन्ने से रोशन फ़रमा दिया ।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

आप भी म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये

ख़रबूजे को देख कर ख़रबूजा रंग पकड़ता है, तिल को गुलाब के फूल में रख दो तो उस की सोहबत में रह कर गुलाबी हो जाता है। इसी तरह तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर आशिकाने रसूल की सोहबत में रहने वाला अल्लाह और उस के रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मेहरबानी से बे वक़अत पथ्थर भी अनमोल हीरा बन जाता, ख़ूब जग-मगाता और ऐसी शान से पैके अजल को लब्बैक कहता है कि देखने सुनने वाला उस पर रश्क करता और ऐसी ही मौत की आरजू करने लगता है। आप भी तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये। अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत और राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले आशिकाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये और शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ के अ़ता कर्दा म-दनी इन्आमात पर अमल कीजिये, اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ आप को दोनों जहां की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी।

मक्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी

सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़ार मदीने का

गौर से पढ़ कर येह फ़ोर्म पुर कर के तफ़्सील लिख दीजिये

जो इस्लामी भाई फ़ैज़ाने सुन्नत या अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** के दीगर कुतुब व रसाइल सुन या पढ़ कर, बयान की केसिट सुन कर या हफ़्तावार, सूबाई व बैनल अक्वामी इज्तिमाआत में शिकत या म-दनी काफ़िलों में सफ़र या दा 'वते इस्लामी के किसी भी म-दनी काम में शुमूलिय्यत की ब-र-कत से म-दनी माहोल से वाबस्ता हुए, ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हुवा, नमाज़ी बन गए, दादी, इमामा वग़ैरा सज गया, आप को या किसी अज़ीज़ को हैरत अंगेज़ तौर पर सिहहत मिली, परेशानी दूर हुई, या मरते वक़्त कलिमए तय्यिबा नसीब हुवा या अच्छी हालत में रूह कब्ज़ हुई, मर्हूम को अच्छी हालत में ख़्वाब में देखा, बिशारत वग़ैरा हुई या ता 'वीज़ाते अत्तारिय्या के ज़रीए आफ़ात व बलिय्यात से नजात मिली हो तो हाथों हाथ इस फ़ोर्म को पुर कर दीजिये और एक सफ़हे पर वाक़िआ की तफ़्सील लिख कर इस पते पर भिजवा कर एहसान फ़रमाइये "मजलिसे अल मदी-नतुल इल्मिय्या" म-दनी मर्कज़ दा 'वते इस्लामी, फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद, गुजरात ।"

नाम मअ वल्दिय्यत :..... उम्र..... किन से मुरीद या तालिब हैं..... ख़त मिलने का पता.....
 फ़ोन नम्बर (मअ कोड) :ई मेइल एड्रेस
 इन्क़िलाबी केसिट या रिसाले का नाम :..... सुनने, पढ़ने या वाक़िआ रूनुमा होने की तारीख़/महीना/ साल :..... कितने दिन के म-दनी काफ़िले में सफ़र किया :..... मौजूदा तन्ज़ीमी जिम्मादारी.....
 मुन्दरिजए बाला ज़राएअ से जो ब-र-कतें हासिल हुई, फुलां फुलां बुराई छूटी वोह तफ़्सीलन और पहले के अमल की कैफ़िय्यत (अगर इब्रत के लिये लिखना चाहें) म-सलन फ़ेशन परस्ती डकैती वग़ैरा और अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** की ज़ाते मुबा-रका से ज़ाहिर होने वाली ब-रकात व करामात के "ईमान अफ़ोज़ वाक़िआत" मक़ाम व तारीख़ के साथ एक सफ़हे पर तफ़्सीलन तहरीर फ़रमा दीजिये ।

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَا بَعْدُ
فَاعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

म-दनी काफ़िले का जद्वल

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, शहन्शाहे अबरार
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : “बरोजे
 क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ
 पर ज़ियादा दुरुदे पाक पढ़े होंगे।” (ترمذی، کتاب الوتر، ج ۲، ص ۲۷، مدارالفکر بیروت)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

जद्वल म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ मुरत्तब करने की
 कोशिश की गई है। इस के मुताबिक़ मा'मूल रखने की
 ब-र-कत से 72 म-दनी इन्आमात का मुकम्मल 72 म-दनी इन्आमात का
 आमिल बनने की सआदत पा सकते हैं।

म-दनी मश्वरे का हल्का : (9:30 ता 9:56) : इस हल्के में
 (5 मिनट) तिलावत व ना'त और बाकी (26 मिनट) में जद्वल की
 दोहराई, ए'लानात की दोहराई और मश्वरे का हल्का लगाया जाए
 जद्वल की दोहराई अमीरे काफ़िला खुद ही करें शु-रका से सिर्फ़
 एक एक काम पर मश्वरा लिया जाए, मश्वरा मश्वरे के तौर पर ही
 लिया जाए ताकि इस्लामी भाई मज़ाक़ न बनाएं।

म-दनी मश्वरे का हल्का : (9:30 ता 9:56) : मस्जिद में पहुंच कर हर वक्त बा वुजू रहने की निय्यत के साथ वुजू फ़रमा कर मक्रूह वक्त न हो तो दोगाना अदा कीजिये, दोगाना में तहिय्यतुल वुजू और तहिय्यतुल मस्जिद भी आ गई अगर थकन हो तो आराम कर लें, वरना अब (5 मिनट) तिलावत व ना'त और बाकी (26 मिनट) अमीरे काफ़िला जद्वल की तफ़्सीलात बताए, म-दनी मश्वरे का हल्का तीन हिस्सों में तक्सीम है (1) जद्वल की दोहराई (2) ए'लानात (3) जिम्मादारियों की तक्सीम (जद्वल की दोहराई और ए'लानात आख़िरी सफ़हात पर मुला-हज़ा फ़रमाएं) अमीरे काफ़िला मुख़्तलिफ़ उमूर के बारे में सिर्फ़ एक एक काम पर मश्वरा ले, मश्वरा मश्वरे के तौर पर ही लिया जाए ताकि माहोल ग़ैर सन्जीदा न हो। दर्स व बयान व दीगर मसाजिद में फ़ज़्र व ज़ोहर में बमअ रु-फ़का जा कर दर्स देने और खाना पकाने की जिम्मादारियां तक्सीम करे। (खाने की तय्यारी इशराक़ व चाश्त के बा'द से ले कर मश्वरे के हल्के से पहले कर ली जाए नीज़ दो वक्त का सालन एक साथ ही तय्यार कर लिया जाए और जिम्मादारियां रोज़ाना बदल बदल कर दी जाएं, येह न हो कि रोज़ाना के लिये धोने पकाने वग़ैरा वाला मख़्सूस कर लिया कि बेचारा सुन्नतें सीखने ही से महरूम रहे) एक इस्लामी भाई की जिम्मादारी येह हो कि ज़रूरतन आराम

के वक्फ़े में जाग कर सामान वगैरा की हिफ़ाज़त करें हर इस्लामी भाई को “ए’लाने अ़स् व मगरिब” याद करवा कर बारी बारी सब से ए’लान करवाइये । (40 मिनट)

म-दनी मक्सद का हल्क़ा : (9:57 ता 10:37) यह हल्क़ा (41 मिनट) का है, इस हल्के में अमीरे काफ़िला इब्तिदाई (26 मिनट) अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** के रसाइल से बयान करे, बयान इस अन्दाज़ में हो कि शु-रका बोर न हों, अमीरे काफ़िला इस बयान के ज़रीए इस्लामी भाइयों को येह ज़ेहन दे कि **“मुझे नेक बनना है”** और उन में ऐसा ज़ब्बा पैदा करे कि जो नमाज़ नहीं पढ़ते थे उन का नमाज़ पढ़ने, म-दनी काफ़िलों में सफ़र करने, दर्स देने और हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत करने का ज़ेहन बन जाए, अमीरे काफ़िला इस बयान के ज़रीए इस्लामी भाइयों में म-दनी मक्सद के तहूत नेकी की दा’वत का ज़ब्बा बेदार करे कि **“मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है ।”**

आख़िरी (15 मिनट) में **“12 म-दनी कामों”** को दोहराइये और इन में से किसी एक म-दनी काम में अ-मलन शामिल होने का ज़ेहन दीजिये ।

इन्फ़िरादी इबादत व मुता-लआ : (10:38 ता 10:56) (19 मिनट) इस हल्के में अमीरे काफ़िला कोशिश करे कि तमाम इस्लामी

भाई इन्फ़रादी इबादत में मसरूफ़ हो जाएं, तिलावते कुरआन, जिब्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ में मसरूफ़ हो जाएं, कोई मदीने शरीफ़ की तरफ़ रुख़ कर के 313 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ने में मसरूफ़ हो जाए, कोई इस्लामी भाई श-जरा शरीफ़ से वज़ाइफ़ की तरकीब बनाए तो कोई 40 रूहानी इलाज से वज़ाइफ़ पढ़ने की तरकीब बनाए। इस हल्के में कोई भी इस्लामी भाई फ़ारिग़ न बैठे (इस दौरान किसी सुन्नी आलिम की किताब का मुता-लआ म-सलन हुसामुल ह-रमैन मअ तम्हीदुल ईमान, म-दनी गुलदस्ते से बहारे शरीअत के मजामीन और मिन्हाजुल आबिदीन के अब्बाब और اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ कम अज़ कम हर साल अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ के तमाम रसाइल और तमाम म-दनी फूलों के पेम्फ़लेट वगैरा का मुता-लआ करूंगा की निय्यत से (जिस क़दर मुम्किन हो) मुता-लआ भी फ़रमा सकते हैं)।

नेकी की दा'वत : (10:57 ता 11:08) इस हल्के में (12 मिनट) नेकी की दा'वत याद करवाए, जो बखुशी सुनाना चाहे वोह खड़ा हो कर सुनाए।

नेकी की दा'वत

हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के आजिज़ बन्दे और उस के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अदना गुलाम हैं यकीनन जिन्दगी

बेहद मुख़्तसर है हम लम्हा ब लम्हा मौत के करीब होते जा रहे हैं । अन्क़रीब हमें अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा । नजात तमाम जहानों के पालने वाले खुदाए **अहूकमुल हाकिमीन** جَلَّ جَلَالُهُ की इताअत और मुअमिनीन पर रहमो करम फ़रमाने वाले रसूले करीम, **रऊफ़रहीम** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नतों की इत्तिबाअ में है । दा'वते इस्लामी का एक म-दनी काफ़िला..... शहर से आप के अलाके की..... मस्जिद में आया हुवा है हम नेकी की दा'वत के लिये हाज़िर हुए हैं । आप से अर्ज है कि आप भी हमारा साथ दीजिये..... मस्जिद में अभी बयान जारी है, अभी तशरीफ़ ले चलिये और चल कर बयान में शिर्कत फ़रमा लीजिये, हम आप को लेने के लिये आए हैं, आइये तशरीफ़ ले चलिये । (अगर वोह तय्यार न हों तो कहें कि) अगर अभी नहीं आ सकते तो नमाज़े मग़रिब वहीं अदा फ़रमा लीजिये । नमाज़ के बा'द **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** सुन्नतों भरा बयान होगा । आप से अज़िज़ाना इल्तिजा है कि बयान ज़रूर सुनियेगा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें और आप को दोनों जहां की भलाइयां नसीब फ़रमाए ।

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

इन्फ़रादी कोशिश का तरीक़ा : (11:09 ता 11:20) अमीरे काफ़िला इन्फ़रादी कोशिश का तरीक़ाए कार सिखाए और अ-मली तरीक़ा कर के दिखाए और जिन इस्लामी भाइयों को तरगीबात

पिछले हल्के में याद न हुई हों तो उन को इस हल्के में भी याद करवाई जा सकती हैं।

इन्फ़रादी कोशिश : (11:21 ता 12:00) इस वक़्त में इस्लामी भाई नज़रें झुकाए बा वक़ार अन्दाज़ में बाहर आम मुसलमानों के पास जा कर बा'दे सलाम मुख़ातब के चेहरे पर निगाहें गाड़े बिग़ैर (इस की आदत बनाने के लिये **اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** कुफ़ले मदीना ऐनक का इस्ति'माल मुफ़ीद रहेगा) इस्लाहे आ'माल, गुनाहों से इज्तिनाब और मौत व आख़िरत का ज़ेहन देते हुए म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र के लिये **इन्फ़रादी कोशिश** कीजिये और हाथों हाथ मस्जिद में लाने की तरकीब बनाएं। इसी दौरान कुछ इस्लामी भाई मस्जिद में 12 म-दनी कामों पर एक दूसरे का ज़ेहन बनाएं।

सुन्नतें सीखने का हल्का : (12:01) ता (12:30) इस हल्के में अमीरे क़ाफ़िला शु-रका को सुन्नतें सिखाने की तरकीब बनाए। 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में “सुन्नतें” सीखने सिखाने की तरतीब : **पहले दिन :** खाने की सुन्नतें और आदाब, **दूसरे दिन :** मिस्वाक शरीफ़ की सुन्नतें, **तीसरे दिन :** सलाम व मुसा-फ़ह्रा की सुन्नतें। 12 दिन और 30 दिन के म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतें सीखने की तरतीब अलग अलग होगी जिस की तफ़सीलात “**रहनुमाए ज़द्वल**” में मुला-हज़ा फ़रमाएं। अमीरे क़ाफ़िला सुन्नतें सिखाते

हुए प्यार और महबूबत से तरकीब बनाए, हरगिज़ हरगिज़ किसी को न डांटे और याद रहे इस हल्के में सुन्नतें सिखानी और याद करवानी हैं और साथ साथ इन सुन्नतों पर अमल का ज़ेहन भी बनाना है, ऐसा न हो कि शु-रका को खड़ा कर के सुन्नतें सुनाने पर जोर दिया जाए। याद करने के बाद कोई खुद सुनाना चाहे तो उस की मरज़ी लेकिन अमीरे काफ़िला इस मुआ-मले में शु-रका पर हरगिज़ हरगिज़ सख़्ती न करे।

है फ़लाहो कामरानी नरमी व आसानी में

हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

वक़फ़ए तआम : (12:30) बजे अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ खाना तनावुल फ़रमाइये। (भूक से कम खाने का ज़ेहन देते हुए तीन उंगलियों से खाने की सुन्नत पर अमल का मशवरा भी दीजिये इस की आदत डालने और दूसरों को डलवाने के लिये थोड़े से रबड़ बेन्ड जेब में रख लिये जाएं। हर खाने के मौक़अ पर बिन्सर या'नी छुंग्लिया के बराबर वाली उंगली को मोड़ कर उस में रबड़ बेन्ड डाल लेना, **ان شاء الله عزوجل** मुफ़ीद रहेगा, मगर अमीरे काफ़िला येह वज़ाहत ज़रूर करता रहे कि हम सुन्नत की आदत बनाने के लिये ऐसा कर रहे हैं, वरना उंगली बांधना सुन्नत भी नहीं और मन्अ भी नहीं) मुम्किन हो तो मिट्टी के बरतन भी ज़रूर इस्ति'माल कीजिये।

चौकदर्स : अजाने जोहर से 12 मिनट क़ब्ल किसी बा रौनक़

मक़ाम पर हुकूके आम्मा का ख़याल रखते हुए म-सलन राह चलने वाले मुसल्मानों और मवेशियों वगैरा का रास्ता रोके बिगैर (7 मिनट) रोज़ाना कम अज़ कम दो दर्स देने की निय्यत के साथ फ़ैज़ाने सुन्नत से चौकदर्स दीजिये । अज़ान होने पर ख़ामोश हो जाइये और जवाब दीजिये । इस दौरान इशारे से गुफ़्त-गू और रखने उठाने वगैरा कामों से भी इज्तिनाब कीजिये (अज़ान व इक़ामत के वक़्त हमेशा इसी तरह एहतिमाम फ़रमाइये) ।

तमाम इस्लामी भाई कम अज़ कम एक इस्लामी भाई को साथ ला कर नमाज़े ज़ोहर बमअ सुन्नते क़ब्लिया पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ ख़ुशूअ व ख़ुजूअ की सअय करते हुए बा जमाअत अदा कीजिये । बा'दे नमाज़ पूरे आदाब का ख़याल रखते हुए दुआ मांगिये (हर नमाज़ में इसी तरह एहतिमाम फ़रमाइये और जिन नमाज़ों में नवाफ़िल हैं, वोह भी अदा कीजिये) ।

दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत : (7 मिनट) फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स दीजिये, (एक इस्लामी भाई को ख़ैर ख़्वाह बनाइये । जो दर्स व बयान में सब को मुबल्लिग़ के क़रीब बिठाए और जाने वालों से नरमी के साथ शिर्कत की दर-ख़्वास्त करे । दर्स के बा'द बैठे बैठे मुलाक़ात कीजिये) इस के बा'द सुन्नतें सिखाने का हल्क़ा लगाइये । इस में बारी बारी इस्लामी भाई सुन्नतें दोहराएं ।

नमाज़ सीखने का हल्का : (30 मिनट) “नमाज़ के अहकाम” से हल्का लगाया जाए, जिस में **वुजू**, गुस्ल, नमाज़ वगैरा और आखिरी दिन नमाज़ का अ-मली तरीका सिखाइये। जो कुछ नमाज़ के अहकाम में लिखा है वोही पढ़ कर सुनाना और याद करवाना है अपनी तरफ़ से हरगिज़ हरगिज़ हरगिज़ वज़ाहत मत कीजिये, किसी मुआ-मले पर बहस भी न करें, कोई उलझे तो अमीरे काफ़िला यूं अर्ज़ कर दे कि नमाज़ के अहकाम में मस्अला यूं ही लिखा है मज़ीद वज़ाहत के लिये आप उ-लमाए अहले सुन्नत से राबिता फ़रमा लीजिये। 3 दिन के म-दनी काफ़िले में “नमाज़ के अहकाम” से सिखाने की तरतीब : **पहले दिन :** वुजू का तरीका, फ़राइज़ और सुन्नतें (स. 8 ता स. 16) (इस में अमीरे काफ़िला वुजू के फ़राइज़ और इस की सुन्नतें याद करवाए बाकी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)।

दूसरे दिन : गुस्ल का तरीका, गुस्ल के फ़राइज़ (स. 100 ता स. 104) (इस में अमीरे काफ़िला सिर्फ़ गुस्ल के फ़राइज़ याद करवाए और बाकी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए) **तीसरे दिन :** तयम्मूम की सुन्नतें, तरीका, फ़राइज़ और नमाज़ का अ-मली तरीका (स. 126 ता स. 129) (इस में अमीरे काफ़िला तयम्मूम के फ़राइज़ और तरीका याद करवाए, बाकी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर

सुनाए) । 12 दिन और 30 दिन के म-दनी काफ़िलों में सिखाने की तरतीब अलग अलग होगी जिस की तफ़्सीलात “रहनुमाए जद्वल” में मुला-हज़ा फ़रमाएं । अगर आप के मख़ारिज दुरुस्त हों तो नमाज़ के अज़्कार जिन में अज़ान का जवाब, इस के बा’द की दुआ, सूरए फ़ातिहा, कुरआन शरीफ़ की आख़िरी 10 सूरतें, दुआए कुनूत, अत्तहिय्यात और दुरूदे इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) याद करवाएं । वरना किसी दुरुस्त मख़ारिज वाले इस्लामी भाई से मदद हासिल करें । इस हल्के में वुज़ू, गुस्ल, नमाज़ वगैरा और आख़िरी दिन नमाज़ का अ-मली तरीक़ा सिखाइये ।

दर्स व बयान सीखने का हल्का : (19 मिनट) इस हल्के में अमीरे काफ़िला शु-रका में से जिन को दर्स नहीं आता उन को दर्स और जिन को बयान करना नहीं आता उन को बयान सिखाए ।

दुआएं याद करने का हल्का : (19 मिनट) गर्मियों में इस वक़्त और सर्दियों में येह हल्का इशा के बा’द होगा । 3 दिन के म-दनी काफ़िले में “दुआएं” सीखने सिखाने की तरतीब : पहले दिन : खाना खाने से पहले और बा’द की दुआ । दूसरे दिन : घर में दाख़िल होने की दुआ । तीसरे दिन : इस्तिन्जा ख़ाने में दाख़िल होने की दुआ ।

दीगर मस्नून दुआओं वगैरा के इलावा छ कलिमे शरीफ़, ईमाने मुफ़स्सल, ईमाने मुज्मल मअ तरजमा, बालिग़, ना बालिग़ और ना बालिगा के जनाजे की दुआएं, तल्बिया, तकबीरे तशरीक़ और दीगर मस्नून दुआओं वगैरा में से (जितना मुम्किन हो) याद करवाइये । अजाने अस्स तक वक्फ़ए इस्तिराहत हो, आराम कीजिये या किसी म-दनी इन्आम पर अमल कर लीजिये म-सलन म-दनी मक्तूब वगैरा की तरकीब कर सकते हैं (बाहर किसी भी वक्त हरगिज़ मत घूमिये) 12 दिन और 30 दिन के म-दनी काफ़िलों में दुआएं सीखने सिखाने की तरतीब अलग अलग होगी जिस की तफ़्सील “रहनुमाए जद्वल” में मुला-हज़ा फ़रमाएं ।

हल्कों के बा 'द अजाने अस्स तक वक्फ़ए आराम अलाकाई दौरा बराए नेकी की दा'वत : बा'दे नमाजे अस्स : (12 मिनट) नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल पर बयान हो । अलाकाई दौरे का ए'लान दुआ से पहले कर लीजिये । (अमीरे काफ़िला को चाहिये कि काफ़िला पहुंचते ही इमामे मस्जिद/ ख़तीब/ कमेटी वगैरा से ए'लानात की इजाज़त की तरकीब बना ले, ए'लान करने वाले को चाहिये कि नमाजे अस्स इक़ामत कहने वाले के दाई जानिब अदा करे और वहीं किब्ला रू खड़े हो कर ए'लान करे, ए'लान इतनी आवाज़ से हो कि तमाम नमाज़ी ब आसानी सुन सकें) दुआ के बा'द नेकी की दा'वत के

फ़जाइल पर (12 मिनट) बयान हो, हाज़िरीन को अ़लाकाई दौरा बराए नेकी की दा'वत के लिये तय्यार किया जाए। फिर म-दनी मर्कज़ के दिये हुए तरीके के मुताबिक़ अ़स्स के बा'द ही अ़लाकाई दौरा कीजिये और नेकी की दा'वत ज़बानी याद कर के पेश कीजिये। इस दौरान अ़स्स ता मग़रिब मस्जिद में दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़ीज शुदा) और अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** के रसाइल से दर्स दिया जाए। 3 दिन के म-दनी काफ़िले में सिर्फ़ फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़ीज शुदा) के बाब आदाबे त़आम से ही तरकीब की जाए। तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

- (1) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़ीज शुदा) के नीचे दिये हुए (सफ़हा नम्बर 177 ता 209)
- (2) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़ीज शुदा) के नीचे दिये हुए (सफ़हा नम्बर 210 ता 242)
- (3) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़ीज शुदा) के नीचे दिये हुए (सफ़हा नम्बर 243 ता 276)

हो सके तो आख़िर में चन्द मिनट सुन्नतें सीखने सिखाने का हल्का लजाया जाए।

बा'दे नमाज़े मग़रिब : फ़र्ज के बा'द ए'लान, म-दनी काफ़िलों में हाथों हाथ सफ़र की तरगीब पर पहले और दूसरे दिन (तक्रीबन 12 मिनट) और आख़िरी दिन (तक्रीबन 26 मिनट) बयान हो।

पहले दिन तरगीब दिला कर निय्यतें करवाएं और दूसरे दिन निय्यत करवाने के साथ साथ नाम भी लिखें, आखिरी रात सफ़र की निय्यत करने और नाम लिखवाने वालों के साथ सुन्नतों भरा इज्तिमाअ कर के बुजुर्गाने दीन رَحْمَهُمُ اللهُ تَعَالَى की दीन की ख़ातिर कुरबानियां बता कर म-दनी क़ाफ़िलों की भरपूर तरगीब पर बयान हो । (इस बात का खुसूसी ख़याल रखिये कि मग़रिब और इशा दोनों में से जिस में नमाज़ी ज़ियादा हों उसी नमाज़ में इज्तिमाअ की तरकीब बनाए जिस में मुख़्तसर तिलावत, ना'त शरीफ़ और 26 मिनट का बयान, सलातो सलाम के तीन अशआर और दुआ की जाए) बा'दे इज्तिमाअ हाथों हाथ तय्यार होने वालों की म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की तरकीब बनाइये । खुद भी यकमुश्त 12 माह के लिये सफ़र की निय्यत फ़रमा कर (मुम्किन हो तो) हाथों हाथ सफ़र की तरकीब बना लीजिये (दौराने सफ़र अगर गाड़ी में हों तो) खिड़की से बाहर नज़र डालने से बचिये ।

वक़फ़ए तआम : (मग़रिब ता इशा) अच्छी अच्छी निय्यतें कर के सुन्नत के मुताबिक़ दुआ पढ़ कर खाना खाने की तरकीब बनाइये । दौराने तआम हर लुक़्मे पर "يَا وَاجِدٌ" वगैरा भी पढ़िये । इस के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ का मुरत्तब कर्दा निय्यतों वाला कार्ड मक-त-बतुल मदीना से हासिल किया जा

सकता है ।

बा'दे नमाजे इशा : फ़ैज़ाने सुन्नत से (7 मिनट) दर्स दीजिये फिर केसिट बयान से पहले (7 मिनट) इन्फ़िरादी कोशिश के लिये दो दो इस्लामी भाई बाहर जाएं और फिर वापस आ कर केसिट इज्तिमाअ की तरकीब बनाएं, जिस में एक दिन अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** का बयान और एक दिन म-दनी मुजाकरा सुनें । अगर केसिट बयान मुयस्सर न हो तो अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** के रसाइल से बयान किया जाए । (नोट : जिन जिम्मादारान के बयानात की केसिटें मक-त-बतुल मदीना पर आ चुकी हैं, इस हल्के में उन के बयानात की केसिटें भी चला सकते हैं ।) इस हल्के में कम अज़ कम दो घन्टे दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों में सर्फ़ करने की निय्यत के साथ **पर्दे में पर्दा** के एहतियाम और पूरे दिन **सब्ज़ इमामा** शरीफ़ बमअ सरबन्द, जुल्फ़ें, एक मुश्त दाढी, सुन्नत के मुताबिक़ सफ़ेद लिबास, सामने सीने की जानिब मिस्वाक और टख़्नों से ऊंचे पाइंचे रखने की निय्यत के साथ शरीक हों । बा'दे हल्का इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए म-दनी माहोल की ब-र-कतें बता कर म-दनी काफ़िलों में सफ़र की निय्यतें करवा कर नाम वग़ैरा लिखें और अपने साथ सफ़र भी करवाएं ।

कुफ़ले मदीना : शु-रकाए काफ़िला को चूँकि अक्सर वक़्त मस्जिद ही में गुज़ारना है लिहाज़ा **कुफ़ले मदीना** से मु-तअल्लिक़ इन चन्द इन्आमात के नफ़ाज़ में दोनों जहाँ की अफ़ियत है । म-सलन **कहक़हा** लगाने से बचते हुए ज़रूरी बात भी दा'वते इस्लामी की **इस्तिलाहात** के इस्ति'माल के साथ (दुरुस्त तलफ़ुज़ की अदाएगी का लिहाज़ रखते हुए) **कम लफ़ज़ों में लिख कर** या **इशारे** से करना और **फुज़ूल** बात मुंह से निकलने पर नादिम हो कर दुरूदे पाक पढ़ लेना । सामने वाले के चेहरे पर **निगाहें** गाड़े बिगैर **नज़रें झुका** कर गुफ़्त-गू करने की अदत डालना । (इस के लिये रोज़ाना कम अज़ कम बारह मिनट **कुफ़ले मदीना** के ऐनक का इस्ति'माल मुफ़ीद है) **दोहराई का हल्का :** (12 मिनट) आज जो कुछ सीखा है अमीरे काफ़िला हल्के की सूरत में शु-रका के सामने खुद ही उस की **दोहराई** करे और अगर कोई बखुशी सुनाना चाहे तो सुने और हौसला अफ़ज़ाई भी करे ।

फ़िक़े मदीना : फिर अमीरे काफ़िला म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ **इज्तिमाई फ़िक़े मदीना** खुद करवाए जिस में तमाम शु-रकाए काफ़िला सन्जी-दगी और तवज्जोह के साथ आज **म-दनी इन्आमात** के मुताबिक़ कहां तक अमल हुवा के तहूत म-दनी इन्आमात के रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर करने की तरकीब करें । फिर **इज्तिमाई**

तरगीब दिला कर तमाम शु-रका को निय्यत करवाएं कि **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** रोज़ाना कम अज़ कम 2 इस्लामी भाइयों को म-दनी काफ़िले में सफ़र और हर माह म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के जम्अ करवाने के लिये तरगीब दिलाएंगे और **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** खुद भी हर माह म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के जम्अ करवाने के साथ साथ तीन दिन के लिये म-दनी काफ़िले में हर माह सफ़र भी करेंगे ।

अख़्लाकी निखार के लिये : सोने से क़ब्ल इन म-दनी इन्आमात का मा'मूल रखने की निय्यत फ़रमा लीजिये और सारा दिन इस के लिये कोशिश भी कीजिये, म-सलन : आप जनाब और "जी" कहने की आदत डालने और बात समझ में आने के बा वुजूद सुवालिया अन्दाज़ में "हैं" या "क्या ?" कहने, दूसरों की बात इत्मीनान से सुनने के बजाए उस की बात काट कर अपनी बात शुरू करने, इल्ज़ाम तराशी, गाली गलोच करने और नाम बिगाड़ने से बचने, उयूब पर मुत्तलअ होने पर पर्दा पोशी और राज़ की बात की हिफ़ाज़त की आदत बनाने, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, हसद, तकब्बुर और वा'दा ख़िलाफ़ी वगैरा से खुद को बचाने, दूसरों से मांग कर चीज़ें इस्ति'माल करने, ऐसे फ़ुज़ूल सुवाल करने से बचने जिस से मुसल्मान उमूमन झूट के कबीरा गुनाह में मुब्तला हो जाते हैं (म-सलन बिला ज़रूरत पूछना ! कि भाई हमारा

खाना कैसा लगा ? आप का सफ़र कैसा गुज़रा ? वगैरा) आजिज़ी के ऐसे अल्फ़ाज़ (जिन की दिल ताईद न करे) बोलने, **फ़िल्में** डिरामे देखने और **गाने बाजे** सुनने की अ़ादत निकालने, सलाम का जवाब और छींकने वाला **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** कहे तो उस के जवाब में **اللَّهُ** इतनी आवाज़ से कहना कि वोह सुन ले, आइन्दा की हर जाइज़ बात के इरादे पर **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**, मिज़ाज पुरसी पर शिक्वा करने के बजाए **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ**, किसी ने'मत को देख कर और गुनाह होते ही **फ़ौरन तौबा** करने की अ़ादत बनाने के लिये भी कोशिश करेंगे। (إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ)

सलातुत्तौबा और वक्फ़ए आराम

सू-रतुल मुल्क, आ-यतुल कुर्सी, तस्बीहे फ़ातिमा सू-रतुल मुल्क, आ-यतुल कुर्सी, तस्बीहे फ़ातिमा **م-दनी इन्आम** पर अमल की सअ़ादत पाने के बा'द सोने की दुआ और सोते वक़्त पढ़ने के अवराद वगैरा पढ़ कर और जमाअते इशा के वक़्त से ले कर दो घन्टे के अन्दर अन्दर फ़ारिग़ हो कर सुन्नत बक्स सिरहाने रख कर आराम फ़रमा लीजिये। मुम्किन हो तो कोई चीज़ बीच में रख लीजिये। मगर किसी के पाउं उस सम्मत् होते हों तो ऐसा बेग न रखिये जिस में कोई किताब या तहरीर हो नीज़ दूसरों के पाउं इस

तरफ होने का अन्देशा हो तो **सुन्नत बक्स** भी वोही सिरहाने रखिये, जिस के ऊपर या अन्दर किसी किस्म की तहरीर या लेबल वगैरा न हो। इसी तरह ता'वीजात और जेब की **तहरीर** निकाल कर अदब की जगह पर रख दीजिये, ताकि किसी और सोने वाले के पाउं उस तरफ न हों, आप भी अपने पाउं किसी तहरीर की तरफ तो नहीं कर रहे ? येह गौर कर लिया करें, और इन बातों का हमेशा खयाल रखिये।

बा अदब बा नसीब

बे अदब बे नसीब

एक तकिये पर दो या एक चादर में भी दो इस्लामी भाई हरगिज़ हरगिज़ न सोएं, अपनी चादर या **चटाई** बिछा कर सोने में एहतियात ज़ियादा है। (बेदार होने पर चादर या चटाई और कपड़े तब्दील कर के फ़ौरन तह फ़रमा लिया करें) नज़्मो ज़ब्त् के साथ एक क़ितार में सोएं, हमेशा दो इस्लामी भाइयों के दरमियान कम अज़ कम दो हाथ का फ़ासिला रखें ज़रूरतन एक या दो इस्लामी भाई जाग कर सामान वगैरा की हिफ़ाज़त फ़रमाएं।

तहज्जुद : सुब्हे सादिक से 19 मिनट क़ब्ल तहज्जुद के लिये जगाइये, **नमाज़े तहज्जुद** के बा'द अज़ाने फ़त्र तक ज़िक्रो दुरूद और **तिलावत** का सिल्सिला जारी रखिये।

रोज़ाना के अवराद : रोज़ाना श-जरा शरीफ़ से चन्द "अवराद"

कम अज़ कम 70 बार इस्तिग़फ़ार, 166 बार لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ, फिर 3 बार مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और बारह मिनट आंखें बन्द कर के 313 मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़िये इस दौरान तसव्वुरे गुम्बदे ख़ज़रा भी कर सकते हैं। अज़ान के वक़्त बातचीत, चलत फिरत, उठाना रखना, फ़ोन पर गुफ़्त-गू वगैरा तमाम काम काज मौकूफ़ कर के अज़ान का जवाब दीजिये (येह ज़िन्दगी भर के लिये अपना मा'मूल बना लीजिये)

सदाए मदीना : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि अज़ाने फ़ज़्र के बा'द (म-दनी काफ़िले के इलावा भी) बिगैर मेगाफ़ोन के दो दो इस्लामी भाई सदाए मदीना लगाएं। लेकिन इस बात का ख़याल रखिये कि इतनी ज़ोरदार आवाज़ न हो कि मरीज़ों, बच्चों और इस्लामी बहनों (जो घर में नमाज़ में मशगूल हों या पढ़ कर दोबारा लैट गई हों) को तशवीश हो। दर्स व बयान करने, ना'त शरीफ़ पढ़ने और स्पीकर वगैरा चलाने में हमेशा नमाज़ियों, तिलावत करने वालों और सोने वालों की ईज़ा रसानी से बचना शरअन वाजिब है। कहीं ऐसा न हो कि हम ज़ाहिरी इबादत से खुश हो रहे हों मगर इस में दूसरों की परेशानी का बाइस बन कर हक़ीक़त में مَعَادَ اللهِ गुनहगार और दोज़ख़ के हक़दार बन रहे हों।

नमाज़े फ़ज़्र खुशूअ व खुजूअ की सअय के साथ पहली

सफ़ में अदा फ़रमाइये । बा'दे नमाज़ पूरे आदाब का ख़याल रखते हुए **दुआ** मांगिये । सारा दिन जिन नमाज़ों में **सुन्नतें** और **नवाफ़िल** हों उन की अदाएंगी का भी एहतिमाम फ़रमाइये ।

बा'दे नमाज़े फ़ज़्र : (30 मिनट) फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द ए'लान हो और 12 मिनट के सुन्नतों भरे बयान के बा'द पुर तपाक तरीक़े पर मुलाक़ात करते हुए **इन्फ़िरादी कोशिश** फ़रमाएं, फ़ज़्र ता इशराक़ वाले **म-दनी हल्के** में शिर्कत की निय्यत के साथ जिन इस्लामी भाइयों को कुरआने मजीद पढ़ना नहीं आता, अमीरे क़ाफ़िला 18 मिनट तक **मद्र-सतुल मदीना** में रोज़ाना शिर्कत और एक बार कुरआने पाक नाज़िरा दुरुस्त मख़ारिज से पढ़ने की निय्यत के साथ आख़िरी दस सूरतों में से कोई सूरह शु-रका को (जिस क़दर मुम्किन हो) याद करवाइये फिर कम अज़ कम तीन आयात **कन्ज़ुल ईमान शरीफ़** से मअ तरजमा व तफ़सीर पढ़ने या सुनने का सिल्लिसला कीजिये (अगर **“ख़ज़ाइनुल इरफ़ान”** पढ़ना दुश्वार मा'लूम हो तो मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का **“नूरुल इरफ़ान”** पढ़ें कि काफ़ी आसान है और येह भी **कन्ज़ुल ईमान** ही की तफ़सीर है) खुदा न ख़्वास्ता मख़ारिज दुरुस्त नहीं तो इस दौरान ज़िक़्रो दुरूद और मुता-लआ में मशगूल रहें और **तलफ़फ़ुज़** की दुरुस्ती के लिये ए'राब का लिहाज़ रखते हुए कम अज़ कम **चार सफ़हात**

फैज़ाने सुन्नत का मुता-लआ फ़रमा लीजिये । तुलूए आफ़ताब के 22 मिनट बा'द इशाराक़ व चाशत के नवाफ़िल अदा कीजिये और बा'दे नवाफ़िल (9 बजे) तक आराम कीजिये ।

मुता-लआ : जो सोना नहीं चाहते वोह मस्जिद में तिलावत, इबादत या मुता-लआ वगैरा फ़रमाएं । मस्जिद के बाहर (किसी वक़्त भी) न घूमें, बा'दे आराम पर्दे में पर्दा के एहतियाम के साथ नाश्ता फ़रमाइये ।

म-दनी इल्तिजाएं : तमाम इस्लामी भाई रोज़ाना श-ज-राए अन्तारिख्या से चन्द अवरद कम अज़ कम “70 बार **أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ**, 166 बार **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ**, फिर तीन बार “**مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**” और बारह मिनट आंखें बन्द कर के कम अज़ कम 313 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ें (येह जिन्दगी भर के लिये मा'मूल बना लीजिये)

मज़ीद म-दनी इन्आमात के हुसूल के लिये

अमीरे क़ाफ़िला अगर शु-रकाए क़ाफ़िला को सफ़र पर रवाना होने से पहले मुन्दरिजए ज़ैल म-दनी इन्आमात के तहूत म-दनी ज़ेहन बनाए तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** म-दनी क़ाफ़िला बहुत कम मसाइल से दो चार होगा म-सलन : मर्कज़ी मजलिसे शूरा, अपने से मु-तअल्लिक़ हर मुशा-वरत व मजलिस के निगरान (म-सलन

अमीरे काफ़िला) की शरीअत के दाएरे में बहर सूरत इताअत करना, एक या चन्द से दोस्ती गांठने से बचना, किसी जिम्मादार या अ़ाम इस्लामी भाई से इख़िलाफ़ की सूरत में दूसरों पर इज़हार न करना, तन्ज़ व हंसी मज़ाक़ की अ़ादत निकालना, गुस्सा आ जाने की सूरत में चुप साध लेना वगैरा, म-दनी काफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में (अव्वल ता आख़िर) शिर्कत, कम अज़ कम चार से मुलाक़ात, एक का मुकम्मल पता हासिल करना और रात ए'तिकाफ़ के साथ साथ إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ मस्जिद इज्तिमाअ में शिर्कत और हफ़्ते में कम अज़ कम एक बार किसी मरीज़ या दुखी के घर या अस्पताल जा कर ग़म ख़्बारी के साथ तोहफ़ा पेश करना, कम अज़ कम एक रोज़ा रखने की सआदत हासिल करना और إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ म-दनी काफ़िले से वापसी पर अज्जबिय्या (या'नी वोह औरत जिस से निकाह जाइज़ हो) से पर्दा करने के साथ, घर के बर आमदों से बाहर और किसी दूसरे के घर में झांकने से बचते हुए अगर घर में म-दनी माहोल बनाने के लिये "15 म-दनी फूल" के मुताबिक़ अपने मा'मूलात रखें तो إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ मुकम्मल 72 म-दनी इन्आमात का अ़ामिल बनने की सआदत पा सकते हैं ।

सदाए मदीना का तरीका

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ कर थोड़े थोड़े वक्फे से दुरूदो
सलाम के जैल में दिये हुए सीगे पढ़ते रहें :

الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَعَلَى الْإِكِّ وَأَصْحَبِكَ يَا حَبِيبَ اللَّهِ

الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللَّهِ وَعَلَى الْإِكِّ وَأَصْحَبِكَ يَا نُوْرَ اللَّهِ

सदाए मदीना इस तरह लगाइये : मीठे मीठे इस्लामी
भाइयो और इस्लामी बहनो ! **फ़ज़्र** की नमाज़ का वक़्त हो गया है ।
नमाज़ नींद से बेहतर है । जल्दी जल्दी **उठिये** और नमाज़ की
तय्यारी कीजिये । **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ आप को बार बार हूज नसीब
करे और बार बार मीठा मीठा **मदीना** दिखाए, जल्दी जल्दी उठिये
और नमाज़े **फ़ज़्र** की **तय्यारी** कीजिये । (अब फिर ऊपर दिया हुआ
दुरूदो सलाम पढ़िये । इस के बा'द मौक़अ की मुना-सबत से दोबारा
ऊपर दिया हुआ मज़्मून या नीचे दिये गए **अमीरे** अहले **सुन्नत**
بِرَكَاتِهِمْ الْعَالِيَةِ के नज़्म कर्दा अश़आर में से मुन्तख़ब अश़आर पढ़िये)

फ़ज़्र का वक़्त हो गया उठो !

फ़ज़्र का वक़्त हो गया उठो ! ऐ गुलामाने मुस्तफ़ा उठो !
 जागो जागो ऐ भाइयो, बहनो ! छोड़ो छोड़ो अब बिस्तरा उठो !
 तुम को हज़ की खुदा सआदत दे जल्वा देखो मदीने का उठो !
 उठो ज़िक्रे खुदा करो उठ कर दिल से लो नामे मुस्तफ़ा उठो !
 फ़ज़्र की हो चुकी अज़ानें वक़्त हो गया है नमाज़ का उठो !
 भाइयो ! उठ कर अब वुज़ू कर लो और चलो ख़ानए खुदा उठो !
 नींद से तो नमाज़ बेहतर है ! अब न मुत्लक़ भी लैटना उठो !
 उठ चुको अब खड़े भी हो जाओ ! आंख शैतां न दे लगा उठो !
 जागो जागो नमाज़, ग़फ़्लत से कर न बैठो कहीं क़ज़ा उठो !
 अब "जो सोए नमाज़ खोए" वक़्त सोने का अब नहीं रहा उठो !
 याद रखवो ! नमाज़ गर छोड़ी क़ब्र में पाओगे सज़ा उठो !
 बे नमाज़ी फंसेगा महशर में होगा नाराज़ किब्रिया उठो !
 मैं सदाए मदीना देता हूँ तुम को तयबा का वासिता उठो !
 मैं भिकारी नहीं हूँ दर दर का मैं हूँ सरकार का गदा उठो !
 मुझ को देना न पाई पैसा तुम ! मैं हूँ तालिब सवाब का उठो !
 तुम को देता है येह दुआ अत्तार फ़ज़्ल तुम पर करे खुदा उठो !

आह ! म-दनी काफ़िला अब जा रहा है लौट कर

अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** के नज़्म कर्दा यह अशआर दा 'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र करने वाले म-दनी काफ़िले की वापसी पर सुन्नतों की तड़प रखने वाले आशिकाने रसूल के वल्वला अंगेज़ जज़्बात के अक्कास हैं ।

आह ! म-दनी काफ़िला अब जा रहा है लौट कर कोई दिल थामे खड़ा है कोई है बा चश्मे तर सुन्नतों की तरबियत के काफ़िलों के क़द्र दां जब पलटते हैं घरों को रोते हैं वोह फूट कर किस क़द्र खुश थे निकल कर चल दिये थे घर से जब अब उदासी छा रही है हाए अपने क़ल्ब पर फ़िक्र थी घरबार की न फ़िक्र कारोबार की लुत्फ़ खूब आता था हम को मस्जिदों में बैठ कर जाते ही दुन्या के झगड़े फिर गले पड़ जाएंगे क्या करें लाचार हैं काबू नहीं हालात पर या खुदा ! चल दूं मैं म-दनी काफ़िलों के साथ काश सुन्नतों की तरबियत के वासिते फिर जल्द तर हाए ! सारा वक़्त मेरा ग़फ़लतों में कट गया आह ! कब होगा मुयस्सर फिर मुबारक येह सफ़र मस्जिदों का कुछ अदब हाए ! न मुज़ से हो सका दर गुज़र फ़रमा इलाही बहरे शाहे बहुरो बर आह ! शैतान हर घड़ी हर वक़्त ग़ालिब ही रहा आदते इस्यां ने रख दी तोड़ कर हाए कमर अपनी सारी नेकियां अतार ने कीं उस के नाम बारह म-दनी काफ़िलों के साथ जो कर ले सफ़र

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ۝

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी हुआ के फ़ौरन बा 'द

اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरा बयान होगा तशरीफ़ रखिये और ढेरों

सवाब कमाइये ।

ए 'लाने अ़स्र : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ۝
आप के अ़लाके में नेकी की दा'वत को आम करने के लिये आप की मदद दरकार है। बराए करम दुआ के बा'द तशरीफ़ रखिये और ढेरों सवाब कमाइये।

ए 'लाने मगरिब : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ۝
मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी नमाज़ के फ़ौरन बा'द اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ। सुन्नतों भरा बयान होगा। तशरीफ़ रखिये और ढेरों नेकियां कमाइये।

जद्वल की दोहराई

اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ म-दनी मश्वरे का हलका जारी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ
साढ़े 12 बजे तक सीखने सिखाने का अ़मल जारी रहेगा। खाना तय्यार हुवा तो सुन्नत के मुताबिक़ बैठ कर पर्दे में पर्दा वाले म-दनी इन्आम पर अ़मल करते हुए खा लिया जाएगा वरना निगाहें झुकाए मुसलमानों को सलाम करते हुए चलने वाले (म-दनी इन्आम पर अ़मल करते हुए) किसी बा रौनक़ मक़ाम पर اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ हुकूके आम्मा का ख़याल रखते हुए चौकदर्स दिया जाएगा।

जोहर में जल्दी से तय्यार हो कर मस्जिद की पहली सफ़ मअ़ तकबीरे ऊला (वाले म-दनी इन्आम) के मुताबिक़ बा जमाअत नमाजे जोहर अदा की जाएगी। नमाजे जोहर के बा'द दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत देने या सुनने (वाले म-दनी इन्आम) पर अ़मल की सआदत

हासिल की जाएगी। फिर **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** सीखने सिखाने का अमल जारी रहेगा, वक्त मिलेगा तो आराम कर लिया जाएगा, वरना अजाने अस्स से क़ब्ल फ़ौरन तय्यार हो कर, नमाज़े अस्स मस्जिद की **पहली सफ़** मअ तक्बीरे ऊला (वाले म-दनी इन्आम) के मुताबिक़ मअ **सुन्ते क़ब्लिया** बा जमाअत अदा की जाएगी। नमाज़ के बा'द एक इस्लामी भाई ए'लान फ़रमाएंगे, फिर **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** बयान होगा। बयान के बा'द **अलाक़ाई दौरा** बराए नेकी की दा'वत (वाले म-दनी इन्आम) पर अमल की सआदत हासिल करने के लिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** बाहर जाएंगे। इस दौरान मस्जिद में दर्स व बयान का सिलसिला जारी रहेगा, अजाने मगरिब से तक्रीबन 10 मिनट क़ब्ल दोबारा मस्जिद में आ जाएंगे और तबई हाजात वगैरा से फ़ारिग़ हो कर **अजान** व इक़ामत के वक्त ख़ामोश रह कर जवाब देने (वाले म-दनी इन्आम) पर अमल करते हुए तमाम इस्लामी भाई नमाज़े मगरिब **पहली सफ़** में तक्बीरे ऊला (वाले म-दनी इन्आम) के मुताबिक़ बा जमाअत अदा करेंगे, नमाज़ के बा'द एक इस्लामी भाई ए'लान करेंगे फिर **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** बयान होगा, बयान के बा'द 12 मिनट **इन्फ़रादी कोशिश** करने (वाले म-दनी इन्आम) पर अमल की सआदत हासिल की जाएगी, खाना मुयस्सर हुवा तो (म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ **पर्दे में पर्दे** की एह्तियात के साथ पेट का **कुफ़्ले मदीना** लगाते हुए) खा लिया जाएगा वरना अजाने इशा से क़ब्ल जल्दी तय्यारी कर के मस्जिद की **पहली सफ़** मअ

तक्बीरे ऊला (वाले म-दनी इन्आम) के मुताबिक नमाजे इशा बा जमाअत अदा की जाएगी ।

दर्स के बा'द **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** केसिट इज्तिमाअ होगा या रसाइले अत्तारिय्या (वाले म-दनी इन्आम पर अमल करते हुए) एक रिसाला पढ़ कर सुनाया जाएगा, इस दौरान कुछ इस्लामी भाई 19 मिनट के लिये बाहर जा कर नए और पुराने इस्लामी भाइयों पर इन्फ़रादी कोशिश (वाले म-दनी इन्आम) की तरकीब बनाएंगे, इस के बा'द दोहराई का हल्का होगा, फिर सलातुत्तौबा और सू-रतुल मुल्क (वाले म-दनी इन्आम) पर अमल की सआदत हासिल की जाएगी इस के बा'द तमाम इस्लामी भाई (इज्तिमाई तौर पर) फ़िक्रे मदीना (वाले म-दनी इन्आम) पर अमल की सआदत पा कर म-दनी इन्आम के मुताबिक सुन्नत बक्स सिरहाने रख कर सोते वक़्त के अवरद पढ़ कर मुम्किन सूरत में पर्दे में पर्दा की तरकीब कर के सो जाएंगे । वक़्ते मुनासिब पर तहज्जुद की नमाज़ के लिये उठाया जाएगा तमाम इस्लामी भाई तहज्जुद की नमाज़ (वाले म-दनी इन्आम) पर अमल की सआदत हासिल करेंगे, फिर श-ज-रए अत्तारिय्या (वाले म-दनी इन्आम) पर अमल करते हुए तिलावत और ज़िक्रो दुरूद में मशगूल हो जाएंगे । अजाने फ़ज़्र के बा'द तमाम इस्लामी भाई सदाए मदीना (वाले म-दनी इन्आम) पर अमल की सआदत पाने के लिये मस्जिद से बाहर तशरीफ़ ले जाएंगे । जमाअते फ़ज़्र से तक़ीबन 10 मिनट कब्ल वापस आ कर

मस्जिद की पहली सफ़ में तकबीरे ऊला (वाले म-दनी इन्आम) के मुताबिक नमाजे फ़त्र बा जमाअत अदा करेंगे। नमाज के बा'द एक इस्लामी भाई ए'लान करेंगे, फिर **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** बयान होगा, इस के बा'द **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** सीखने सिखाने का अमल जारी रहेगा। फिर तमाम इस्लामी भाई इश्राक़ व चाश्त के नवाफ़िल अदा करने (वाले म-दनी इन्आम) पर अमल की सआदत हासिल करेंगे। फिर वक्फ़ा बराए आराम होगा। 08:45 पर तमाम इस्लामी भाइयों को नींद से बेदार किया जाएगा। तमाम इस्लामी भाई तबई हाजत वगैरा से फ़ारिग़ हो कर 09:00 बजे नाश्ता करेंगे और **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** साढ़े नव बजे दोबारा इसी तरह म-दनी मश्वरे का हल्का शुरूअ हो जाएगा। मैं भी इस पर अमल करने की निय्यत करता हूं आप तमाम इस्लामी भाई भी निय्यत फ़रमा लीजिये जोर से कहिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

يا رब्बे मुस्तफ़ा عَزَّ وَجَلَّ ! ब तुफ़ैले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हमें आशिक़ाने रसूल के म-दनी काफ़िलों में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! म-दनी काफ़िलों में सफ़र करने वालों के तुफ़ैल हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत कर। **या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में इस्तिक़ामत अता फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! हमें सच्चा आशिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! उम्मते महबूब की बख़्शिश फ़रमा।

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

म-दनी मश्वरा

शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ दौरे हज़िर की वोह यगानए रोज़गार हस्ती हैं कि जिन से श-रफ़े बैअत की ब-र-कत से लाखों मुसलमान गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर अल्लाहु रहमान عُرُوْجُل के अहकाम और उस के प्यारे हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नतों के मुताबिक़ पुर सुकून ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। ख़ैर ख़ाहिये मुस्लिम के मुक़द्दस ज़ब्बे के तहत हमारा म-दनी मश्वरा है कि अगर आप अभी तक किसी जामेए शराइत पीर साहिब से बैअत नहीं हुए तो शैखे तरीकत अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ के फुयूज़ो ब-रकात से मुस्तफ़ीद होने के लिये इन से बैअत हो जाइये। إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ दुनिया व आख़िरत में काम्याबी व सुख़-रूई नसीब होगी।

मुरीद बनने का तरीक़ा

अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं तो अपना और जिन को मुरीद या तालिब बनवाना चाहते हैं उन का नाम नीचे तरतीब वार मअ वल्दियत व उम्र लिख कर “मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अत्तारिय्या, म-दनी मर्कज़ दा'वते इस्लामी, फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद, गुजरात” के पते पर रवाना फ़रमा दें तो إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी सिल्सिलए कादिरिय्या र-जविय्या अत्तारिय्या में दाख़िल कर लिया जाएगा।

(पता अंग्रेज़ी के केपीटल हुरूफ़ में लिखें)

E.Mail : attar@dawateislami.net

(1) नाम व पता बोल पेन से और बिल्कुल साफ़ लिखें, ग़ैर मशहूर नाम या अल्फ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं। अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की हाज़त नहीं। (2) एड्रेस में महरम या सर परस्त का नाम ज़रूर लिखें। (3) अलग अलग मक्तूबात मंगवाने के लिये जवाबी लिफ़ाफ़े साथ ज़रूर इरसाल फ़रमाएं।

नम्बर शुमार	नाम	मर्द/ औरत	बिन/ बिन्ते	बाप का नाम	उम्र	मुकम्मल एड्रेस

म-दनी मश्वरा : इस फ़ॉर्म को महफूज़ कर लें और इस की मज़ीद कोपियां करवा लें।